अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

दीनानाथ वर्मा

ज्ञानदा प्रकाशन (पी. एण्ड डी.)
नई दिल्ली - 110 002

Scanned by TapScanner

विषय-सूची

खण्ड 1

विषय | पृष्ठ

1. प्रथम विश्व युद्ध 1-6

सर्बिया का राष्ट्रीय आन्दोलन, सराजेवो हत्याकाण्ड, रूस में युद्धबंदी, जर्मनो में युद्धबंदी, फ्रांस का युद्ध में प्रवेश, प्रथम विश्व युद्ध के कारण, गुप्त संधियां, उग्रराष्ट्रीयता, साम्राज्यवाद, सैनिकवाद, समाचार पत्रों द्वारा झूठा प्रचार, फ्रांस की बदले की भावना, अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता, बालकन प्रायद्वीप में शत्रुता, तत्कालिक कारण।

2. पेरिस का शान्ति समझौता 7-34

शान्ति की समस्या—पेरिस का शान्ति-सम्मेलन, सर्वोच्च शांति परिषद, विल्सन, लायड जार्ज, क्लिमेंशो, ओरलैंडो, आयोग और समितियां, गुप्त सन्धियां और सम्मेलन की कठिनाइयां, वातावरण, **वर्साय की सन्धि**—सन्धि पर हस्ताक्षर, राष्ट्रसंघ, प्रादेशिक व्यवस्थाए, एल्सेस लोरेन, राइनलैंड, सार बेल्जियम और डेनमार्क की प्राप्ति, जर्मनी की पूर्वी सीमा, यूरोप में जर्मनी की प्रादेशिक क्षति, जर्मन उपनिवेश, **सैनिक व्यवस्था**— जर्मनी का निरस्त्रीकरण, आर्थिक-व्यवस्था, क्षतिपूर्ति, युद्ध अपराध, जर्मनी पर सन्धि का प्रभाव, **वर्साय सन्धि का मूल्यांकन**, विविध प्रतिक्रियाएं, आरोपित सन्धि, साधारण शिष्टाचार का उल्लंघन, सन्धि का आधार, विश्वासघात, कठोर सन्धि, कठिन सिद्धान्तों पर आधारित सन्धि, द्वितीय विश्व-युद्ध के कारण, राज-नेतृत्व की महान पराजय, **वर्साय सन्धि का औचित्य**—जनमत, विविध आयोग और कार्यपद्धति, विविध आकांक्षाएं, राष्ट्रीयता का सिद्धान्त, सम्मेलन की कठिनाइयां, रूस की क्रांति, राष्ट्र-संघ, **अन्य शान्ति सन्धियाँ**—सांजर्मे की सन्धि, त्रियानो की सन्धि, निऊली की सन्धि, सेव्र की सन्धि, पेरिस शान्ति-व्यवस्था पर एक दृष्टि।

3. राष्ट्रसंघ 35-65

ऐतिहासिक पृष्ठाधार—राष्ट्रसंघ का जन्म, राष्ट्रसंघ के उद्देश्य, सदस्यता, वित्त और प्रधान कार्यालय, **राष्ट्रसंघ के अंग और उनके कार्य**—एसेम्बली, कौंसिल, एसेम्बली और कौंसिल के पारस्परिक सम्बन्ध, सचिवालय, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-संघ, श्रम-संघ का संगठन, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का शान्तिपूर्ण निबटारा, **संरक्षण प्रणाली**—अल्पसंख्यक जातियों की समस्या, राष्ट्रसंघ के प्रशासकीय कार्य, सार का प्रशासन, डान्जिग का प्रशासन, राष्ट्रसंघ का स्वरूप, शान्ति संस्थापक के रूप में राष्ट्रसंघ, **राष्ट्रसंघ का पतन**—मंचूरिया का युद्ध, अबीसीनिया का युद्ध, राष्ट्रसंघ और स्पेन का गृह-युद्ध, अन्त्येष्टि क्रिया, **राष्ट्रसंघ की असफलता के कारण**—राष्ट्रसंघ का अन्त, राष्ट्रसंघ के गैर-राजनीतिक कार्य, राष्ट्रसंघ का मूल्यांकन।

4. सुरक्षा और निरस्त्रीकरण की समस्या 66-91

विषय-प्रवेश, फ्रांसीसी सुरक्षा की समस्या—भौगोलिक गारंटी, आंग्ल-फ्रांसीसी मदभेद, बेल्जियम और पौलैंड़ के साथ सन्धि, लघुमैत्री संघ, फ्रांसीसी गुटबन्दी का खोखलापन, जेनेवा प्रोटोकोल **लोकार्नो पैक्ट**—लोकार्नो समझौते की पृष्ठभूमि, समझौते की कठिनाइयां, लोकार्नो की सन्धियां, **लोकार्नो समझौते का मूल्यांकन**—लोकार्नो समझौते की त्रुटियां, पेरिस पैक्ट, पेरिस पैक्ट की पृष्ठभूमि, पेरिस समझौते का मूल्यांकन। **निरस्त्रीकरण की समस्या**—प्रारम्भिक प्रयास, **वाशिंगटन सम्मेलन**—राष्ट्रसंघ के प्रयास, जेनेवा सम्मेलन, लन्दन सम्मेलन, राष्ट्रसंघ के अर्न्तगत निरस्त्रीकरण के प्रयास, जेनेवा का निरस्त्रीकरण सम्मेलन, फ्रांसीसी प्रस्ताव, ब्रिटिश प्रस्ताव, रूसी प्रस्ताव, अमेरिकी प्रस्ताव, जर्मनी की मांग, मैकडानल्ड योजना, फ्रांस का रूख, फ्रांसीसी योजना, सम्मेलन का अन्त, निरस्त्रीकरण की असफलता, सम्मेलन की विफलता के कारण।

5. क्षतिपूर्ति, युंद्ध-ऋण और आर्थिक-संकट 92-111

क्षतिपूर्ति की समस्या—क्षतिपूर्ति की कठिनाइयां, जर्मनी की कठिनाइयां, आंग्ल, फ्रांसीसी मतभेद, राइन में पार्थक्यवादी आंदोलन, रूर आधिपत्य से डावस-योजना तक, डावस-योजना, डावस-योजना का मूल्यांकन, यंग-योजना, हूवर-मुहलत, लुसान-सम्मेलन और क्षतिपूर्ति का अन्त। **आर्थिक-संकट**—आर्थिक संकट के कारण, प्रलय का आरम्भ, जर्मनी की स्थिति, आर्थिक संघ का प्रस्ताव,

Scanned by TapScanner

क्रेडिट-आन्स्टाल्ट का दिवाला, ब्रिटेन में संकट, विश्व अर्थ सम्मेलन, संकट का अन्त, आर्थिक संकट के परिणाम।

112-123

6. जर्मनी में नात्सी क्रान्ति

जर्मनी का पुनरोद्भव, **नात्सी क्रान्ति के कारण**—वर्साय की संधि, जातीय परम्परा, आर्थिक संकट, साम्यवाद का बढ़ता हुआ प्रभाव, संसदीय परम्परा का अभाव, जर्मनी की सैनिक प्रवृत्ति, हिटलर का व्यक्तित्व, हिटलर का अभ्युदय, पैंटर से चांसलर, जर्मन गणतन्त्र का विनाश, यूरोपीय राजनीति पर नात्सी क्रान्ति का प्रभाव।

124-147

7. जर्मनी की विदेश-नीति और द्वितीय विश्व-युद्ध

जर्मन विदेश-नीति का उद्देश्य, हिटलर और वर्साय-सन्धि, पोलैंड के साथ समझौता, आस्ट्रिया को हड़पने का प्रयत्न, ब्रिटेन के साथ समझौता, स्ट्रेसा सम्मेलन, राइनलैंड का पुनर्सैनिकीकरण, **रोम-बर्लिन धुरी और कामिनटन-विरोधी समझौता**—आस्ट्रिया का जर्मनी में विलयन, आस्ट्रिया को हड़पने की तैयारी, आस्ट्रिया पर आधिपत्य, आस्ट्रिया कांड का महत्त्व, **चेकोस्लोवाकिया का विनाश और म्युनिख का समझौता**—चेकोस्लोवाकिया का सामरिक महत्त्व, चेकोस्लोवाकिया में जर्मन अल्पसंख्यकों की समस्या, अन्तर्राष्ट्रीय संकट की ओर, रन्सीमन मिशन, बर्टेसगार्डेन का प्रस्ताव, गोडेसबर्ग का प्रस्ताव, म्यूनिख का समझौता, **म्यूनिख समझौते की समीक्षा**— ब्रिटेन द्वारा समझौता करने का कारण, चेकोस्लोवाकिया का अन्त, हिटलर को लाभ, रूस-जर्मन समझौता तथा पोलैंड पर आक्रमण, ब्रिटिश-नीति में परिवर्तन, रूस से अनाक्रमण संधि, अन्तिम संकट।

148-181

8. महाशक्तियों की विदेश-नीति

इटली की विदेश-नीति—विदेशनीति के उद्देश्य, फासिज्म का उत्कर्ष, भूमध्यसागर पर प्रभुत्व-स्थापना का प्रयास, कोर्फू काण्ड, फ्यूम की प्राप्ति, रूस से मित्रता, हिराना की सन्धि, हिटलर का उदय तथा फ्रांस और ब्रिटेन से सहयोग, **अबीसिनिया का युद्ध**—अबीसिनिया पर आक्रमण के कारण, युद्ध का प्रारम्भ, युद्ध के परिणाम, रोम-बर्लिन धुरी, रूस का विरोध, **स्पेन का युद्ध**—गृहयुद्ध की पृष्ठभूमि, विदेशी प्रतिक्रिया, अहस्तक्षेप समिति, इटली का प्रभाव, **फ्रांस की विदेशनीति**—सुरक्षा की खोज, राष्ट्रसंघ के प्रति फ्रांस का रूख, जर्मनी के प्रति फ्रांस की नीति—ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध, 1925 में विदेश नीति में परिवर्तन, पेरिस पैक्ट, राष्ट्रसंघ के अन्तर्गत यूरोपीय संघ बनाने का असफल प्रयत्न, फ्रांस और निरस्त्रीकरण, **हिटलर के युद्धोपरान्त फ्रांस की विदेश-नीति**—रूस और इटली से मित्रता, फ्रांस में तुष्टीकरण नीति का विकास, तुष्टीकरण के कारण।

ब्रिटेन की विदेश नीति—विषय-प्रवेश, साम्यवादी रूस का खतरा, जर्मनी के प्रति सहानुभूति, तुष्टीकरण की नीति का ब्यौरा—ब्रिटिश तुष्टीकरण नीति के प्रमुख आधार, साम्यवादी रूस का आतंक, शक्ति-सन्तुलन का सिद्धान्त, ब्रिटेन और फ्रांस में मतभेद, ब्रिटिश नेताओं की अक्षमता और जनता के विचार, ब्रिटेन की दुर्बलता और चेम्बरलेन का व्यक्तित्व।

संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश-नीति—पार्थक्यवाद, मुनरो सिद्धान्त, अमरीकी साम्राज्यवाद, विश्व राजनीति में दिलचस्पी, अमेरिका और विश्व-युद्ध, शान्ति सम्मेलन और विल्सन, पार्थक्यवाद का पुनरावर्तन, पुनरावर्तन के कारण, पूर्व एशिया में दिलचस्पी, राष्ट्रसंघ का सहयोग, **यूरोपीय समस्याएं और अमेरिका**—तटस्थता कानून, तटस्थता की नीति के परिणाम, लैटिन अमेरिका के साथ सम्बन्ध।

सोवियतसंघ की विदेश-नीति—विषय-प्रवेश, पूँजीवादी हस्तक्षेप, सोवियत संघ का बहिष्कार, नीति-परिवर्तन, विदेशों में सम्पर्क-स्थापना, जेनेवा सम्मेलन, रेपीलो समझौता, रूस-अमेरिका सम्बन्ध, रूस सामूहिक सुरक्षा और राष्ट्रसंघ, अनाक्रमण सन्धियां, पराधीन राज्यों के प्रति सोवियत-संघ का रूख, **रूस जर्मन समझौता**—रूस जर्मन अनाक्रमण सन्धि, समझौते के कारण।

182-198

9. विश्व राजनीति में पश्चिमी एशिया

पश्चिम एशिया का महत्त्व, **तुर्की की विदेश-नीति**—युद्ध के बाद तुर्की की स्थिति, लुसान की सन्धि, तुर्की की विदेश-नीति के मूल आधार, मोन्त्रो की सन्धि, रूस के साथ सम्बन्ध, अन्य यूरोपीय देशों से सन्धियां, अमेरिका और तुर्की, तुर्की के पड़ोसी राष्ट्र, तुर्की और बाल्कन प्रायद्वीप के राज्य, युद्ध के अवसर पर तुर्की, **फिलिस्तीन की समस्या**—बैलफौर घोषणा, फिलिस्तीन पर ब्रिटिश संरक्षता, **पील आयोग**—गोलमेज सम्मेलन, मिस्र और इंगलैंड से सम्बन्ध, 1922 की संधि, विद्रोह की दूसरी लहर, 1924-36 का काल, 1936 की सन्धि, ट्रांसजोर्डन में ब्रिटिश साम्राज्यवाद, इराक में ब्रिटिश साम्राज्यवाद, लेबनान और सीरिया।

199-212

10. विश्व राजनीति में पूर्व एशिया

पेरिस शान्ति सम्मेलन और पूर्व एशिया, **वाशिंगटन सम्मेलन**—पूर्व एशिया में जापान की शक्ति, याल द्वीप का झगड़ा, आंग्ल

Scanned by TapScanner

जापानी संधि, नौसैनिक होड़, वाशिंगटन सम्मेलन, सम्मेलन के निर्णय, महत्व, चीन, चीन की राजनीति, जापानी साम्राज्यवाद का पुनरोदय और मंचूरिया काण्ड, मंचूरिया का महत्व, मंचूरिया विजय की स्थिति, मंचूरिया काण्ड : राष्ट्रसंघ और मंचूरिया काण्ड, मंचूरिया काण्ड का महत्व, चीन-जापान युद्ध, साम्यवाद का खतरा, एंटि कॉमिन्टर्न पैक्ट, चीनी राष्ट्रीयता, चीन-जापान युद्ध।

11. युद्धकालीन अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन और समझौते 215-216

विषय-प्रवेश, अटलांटिक चार्टर, संयुक्त राष्ट्रसंघ की घोषणा, कैसाब्लांका सम्मेलन, मास्को सम्मेलन, काहिरा सम्मेलन, तेहरान सम्मेलन, ब्रिटेन वुड्स सम्मेलन, डम्बार्टन ओक्स सम्मेलन, क्यूबेक सम्मेलन, मास्को सम्मेलन, याल्टा सम्मेलन, सैन्फ्रान्सिस्को सम्मेलन, पोट्सडाम सम्मेलन।

12. द्वितीय विश्वयुद्ध 217-226

द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण, वर्साय व्यवस्था की त्रुटियाँ, ब्रिटिश नीति, शस्त्र निःशस्त्रीकरण, गुटबन्दी, हिटलर की नीति, राष्ट्रसंघ की प्रभावहीन शक्ति।

खण्ड - 2

1. संयुक्त राष्ट्रसंघ 1-87

शांति संधियाँ, युद्धोत्तर विश्व की समस्याएँ, संयुक्त राष्ट्रसंघ की उत्पत्ति, डम्बार्टन ओक्स, सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन, नया संगठन क्यों, संयुक्त राष्ट्रसंघ का जन्म, संयुक्त राष्ट्रसंघ का स्वरूप, संघीय संगठन, संयुक्त राष्ट्रसंघ का चार्टर, उद्देश्य और सिद्धांत, संघ की सदस्यता, विविध व्यवस्थाएँ, सामूहिक सुरक्षा, संयुक्त राष्ट्रसंघ के अंग, साधारण सभा, छोटी असेम्बली और शांति के लिए एकता का प्रस्ताव, महासभा के स्वरूप में परिवर्तन, सुरक्षा परिषद्, सुरक्षा परिषद् के कार्य और अधिकार, सुरक्षा परिषद् की मतदान प्रणाली या वीटो, आर्थिक तथा सामाजिक परिषद्, परिषद् के उद्देश्य, सहायक अंग, प्राविधिक सहायता, मानवीय अधिकार, विशिष्ट एजेन्सियों से सम्बन्ध, संरक्षण परिषद्, संरक्षित प्रदेश, राष्ट्रसंघ तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ के संरक्षण पद्धतियों में तुलना, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, संगठन, क्षेत्राधिकार, सचिवालय, महासचिव की स्थिति, सचिवालय में सुधार की सोवियत योजना, चार्टर के संशोधन की समस्या, प्रथम संशोधन, 1967 के अरब-इजरायल युद्ध के संदर्भ में चार्टर का अनौपचारिक संशोधन, चार्टर की त्रुटियाँ और उनको दूर करने के उपाय, संवैधानिक व्याख्या की समस्या, सदस्यता की समस्या, सुरक्षा-परिषद् में मतदान की दोषपूर्ण व्यवस्था, क्षेत्रीय संगठन की समस्या, संरक्षण-व्यवस्था की त्रुटि, राष्ट्रसंघ और संयुक्त राष्ट्रसंघ की तुलना, संयुक्त राष्ट्रसंघ के राजनीतिक कार्य, ईरान का विवाद, यूनान का विवाद, बर्लिन के घेरे का मामला, इण्डोनेशिया का प्रश्न, फिलिस्तीन की समस्या, स्पेन कोर्फू चैनल विवाद, ट्रीस्टे की समस्या, दक्षिण अफ्रिका में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार का प्रश्न, कश्मीर की समस्या, समस्या का सूत्रपात, संयुक्त राष्ट्र आयोग (U.N.C.I.P.) के कार्य, मैकनाटन योजना, डिक्सन मिशन, ग्राहम मिशन, प्रधानमन्त्रियों की वार्ता, कश्मीर समस्या के स्वरूप में परिवर्तन, जारिंग पुनः ग्राहम मिशन, आयरलैंड का प्रस्ताव, भारत-चीन युद्ध और कश्मीर, पाकिस्तान का घुसपैठी आक्रमण, भारत-पाक युद्ध, सुरक्षा-परिषद की बैठक, यूथान्त का शांति अभियान, सुरक्षा परिषद् की तीसरी बैठक, प्रस्ताव की समीक्षा, युद्ध-विराम, कोरिया की समस्या, सूत्रपात, कोरिया युद्ध, चीन का हस्तक्षेप, विराम-संधि, स्वेज नहर की समस्या, स्वेज के संकट का प्रारम्भ, राष्ट्रीकरण की प्रतिक्रिया, लन्दन सम्मेलन, स्वेज नहर प्रभोक्ता संघ, सुरक्षा परिषद् का प्रस्ताव, मिस्र पर आक्रमण, संयुक्त राष्ट्रसंघ और मिस्र, स्वेज काण्ड के परिणाम, हंगरी का प्रश्न, पृष्ठभूमि, सुरक्षा परिषद में हंगरी का प्रश्न, साधारण सभा में हंगरी का प्रश्न, अल्जीरिया की समस्या और संयुक्त राष्ट्रसंघ, कांगो की समस्या, विषय-प्रवेश, संयुक्त राष्ट्रसंघ में कांगो का मामला, संघ द्वारा कांगो में हस्तक्षेप, भीषण गृह-युद्ध, हैमरशोल्ड की स्थिति, साधारण सभा में कांगो का प्रश्न, लुमुम्बा का भागना, सुरक्षा परिषद् का प्रस्ताव, लुमुम्बा की हत्या, सुरक्षा परिषद् का प्रस्ताव, हैमरशोल्ड की हत्या, विराम संधि, अन्तिम समझौता, साइप्रस की समस्या, यमन की समस्या, वियतनाम की समस्या, सुरक्षा परिषद् में वियतनाम का प्रश्न, क्यूबा का प्रश्न, दक्षिण रोडेशिया की समस्या, डोमीनियन गणराज्य में अमेरिकी हस्तक्षेप, अरब इजरायल संघर्ष, सुरक्षा परिषद् की बैठक, 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, सुरक्षा परिषद् की पहली बैठक, सुरक्षा परिषद् में चार प्रस्ताव, सुरक्षा परिषद् की दूसरी बैठक, साधारण सभा में मामला, सुरक्षा परिषद् की तीसरी बैठक, संयुक्त राष्ट्रसंघ की असफलता; पनामा नहर की समस्या, चतुर्थ अरब-इजरायल युद्ध और संयुक्त राष्ट्रसंघ, तेहरान में अमेरिकी बंधकों का मामला, अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप और संघ, लेबनान का संकट, कम्पूचिया विवाद, निकारगुआ में अमेरिकी हस्तक्षेप का मामला, लीबिया संकट, खाड़ीयुद्ध और संयुक्त राष्ट्रसंघ, बोस्निया हरजेगोविनिया की समस्या, बोसनिया की समस्या, सोमालिया की

Scanned by TapScanner

समस्या, अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण विकारा बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, खाद्य और कृषि संगठन, मुद्राकोष, संयुक्त राष्ट्रसंघ के गैर-राजनीतिक कार्य, आर्थिक कार्य और संगठन, संचार-सम्बन्धी संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय सिविल संगठन, विश्व डाक संघ, अन्तर्राष्ट्रीय दूर-संचार संघ, विश्वऋतु-विज्ञान संगठन, छः प्रादेशिक ऋतु विज्ञान संगठन, अन्तर सरकारी नागरिक सलाहकार संस्था, संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम संगठन, शिक्षा, प्राकृतिक विज्ञान, जिक विज्ञान, सांस्कृतिक कार्य, विद्वानों का आदान-प्रदान, सामूहिक शिक्षा, पुनर्वास, तकनीकी सहायता, स्वास्थ्य एवं कल्याण संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय अणु शक्ति एजेन्सी, विश्व स्वास्थ्य संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष, विश्व शरणार्थी संगठन, के गैर-राजनीतिक कार्यों का मूल्यांकन, संयुक्त राष्ट्रसंघ का मूल्यांकन, महान प्रयोग की असफलता, संघ की उपलब्धियाँ, राज नैतिक विवादों का समाधान, उपनिवेशवाद के उन्मूलन में सफलता, गैर-राजनीतिक क्षेत्रों की सफलताएँ, नैतिक दबाव का अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का स्थल, संयुक्त राष्ट्रसंघ की कुछ समस्याएँ, संयुक्त राष्ट्रसंघीय सेना के खर्च की समस्या, इण्डोनेशिया द्वारा सदस्यता का परित्याग, 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, अरब-इजरायल युद्ध, संयुक्त राष्ट्रसंघ का बदलता हुआ रूप।

2. शीत-युद्ध की राजनीति तथा शीतयुद्ध का अन्त 88-10

दो महान् शक्तियों का अभ्युदय, शीत-युद्ध का अर्थ, शीत-युद्ध के कारण, द्वितीय मोर्चा का प्रश्न, पुरातन व्यवस्था की स्थापना का प्रयास, सोवियत संघ द्वारा माल्टा और बाल्कन समझौते का अतिक्रमण, ईरान से सोवियत सेना को न हटाया जाना, तुर्की पर सोवियत दबाव, यूनान में सोवियत संघ का दबाव, सोवियत संघ द्वारा अमेरिका विरोधी प्रचार अभियान, अणुबम का आविष्कार, सोवियत विरोधी प्रचार अभियान, शीत-युद्ध की प्रगति, खुश्चेव की अमरीकी यात्रा, यू-2 विमान कांड, पेरिस का शिखर सम्मेलन, क्यूबा की घटना, शीत-युद्ध की शिथिलता, सोवियत संघ तथा चीन का वैचारिक विवाद और शीत-युद्ध, जॉनसन की अरब-इजरायल संघर्ष और शीत-युद्ध, ग्लासबरो का शिखर सम्मेलन, वियतनाम युद्ध, मार्च 1969 का बर्लिन संकट, मॉस्को समझौता, 1970 और शीत-युद्ध, बर्लिन समझौता, पूर्व जर्मनी और पश्चिम जर्मनी के बीच समझौता, कोरिया का समझौता, राष्ट्रों के सम्बन्धों में परिवर्तन, यूरोपीय सुरक्षा सम्मेलन, वर्तमान स्थिति, द्वितीय यूरोपीय सुरक्षा सम्मेलन, शीत-युद्ध में शिथिलता के कारण, कार्टर प्रशासन और शीत-युद्ध, अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप और शीतयुद्ध में वृद्धि, रीनाल्ड रीगन की और शीतयुद्ध का नया दौर, **शीत-युद्ध का अन्त** – शीत-युद्ध के समाप्ति के कारण, सोवियत संघ का विघटन।

3. सैनिक गुटबन्दियाँ और प्रदेशवाद 110-11

सैनिक संगठनों की उत्पत्ति, अमेरिकी राज्यों का संगठन, ब्रुसेल्स संधि संगठन, उत्तर अतलांतक संधि संगठन, नाटो के दो प्रमुख लक्ष्य, वारसा पैक्ट, केन्द्रीय सन्धि संगठन तथा बगदाद पैक्ट, दक्षिण-पूर्ण एशिया संधि संगठन, सैनिक संगठनों का घटता हुआ महत्त्व, नाटो का विघटन, सेण्टो और सियाटो का विघटन।

4. निरस्त्रीकरण की समस्या 119-13

निरस्त्रीकरण की आवश्यकता, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद निरस्त्रीकरण समस्या की उत्पत्ति, निरस्त्रीकरण की राजनीति, 19 का समझौता, जेनेवा सम्मेलन, लन्दन सम्मेलन, भारत का प्रस्ताव, स्पुतनिक कूटनीति, बुलगानिन योजना, रापाकी योजना, आइ हावर का जवाब, जेनेवा सम्मेलन, संयुक्त राष्ट्रसंघ में खुश्चेव का प्रस्ताव, जेनेवा सम्मेलन, जुलाई, 1960 से अगस्त 1973 निरस्त्रीकरण में प्रगति, 1963 का आणविक परीक्षण प्रतिबन्ध संधि, निरस्त्रीकरण के अन्य प्रयास, 1963 की परमाणविक अस्त्र-वि निषेध-संधि, 1969-71 में निरस्त्रीकरण वार्त्तालाप, चीनी उपग्रह और निरस्त्रीकरण, भीषण शस्त्रास्त्र, परमाणु आयुध परि समझौता, जुलाई, 1974 का समझौता, सी० टी० बी० टी० पर वार्ता, जूलाई 1996।

5. संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश-नीति 136-1

अमेरिकी विदेश नीति का मूलाधार, ट्रूमन सिद्धान्त, यूनान की समस्या, तुर्की की समस्या, ईरान की समस्या, मार्शल योजना, ... कार्यक्रम, सैनिक सन्धियों की नीति, साम्यवाद के साथ शक्ति-परीक्षण, अमेरिकी विदेश-नीति में खुले संघर्ष का काल, साम्य... की नीति, पारस्परिक सहिष्णुता की नीति, विदेश नीति की नवीन सीमा, क्यूबा का संकट, पश्चिमी यूरोप में अमेरिकी ... मतभेद, पश्चिम यूरोप के साथ सम्बन्ध सुधारने के प्रयास, पश्चिमी यूरोप में अमेरिकी नीति की असफलता, ... अमेरिकी नीति, पश्चिम एशिया में अमेरिकी हस्तक्षेप, पश्चिम एशिया में अमेरिका का सैन्य संगठन, आइसन ... हावर सिद्धांत की प्रतिक्रियाएँ और सिद्धांत का विश्लेषण, आइसन हावर सिद्धान्त का प्रयोग, लेबनान में अ

Scanned by TapScanner

सेना का प्रवेश, जोर्डान में हस्तक्षेप, आइसनहावर सिद्धात का मूल्याकन, अरब-इजरायल युद्ध और अमेरिका, अमेरिका की प्रारम्भिक नीति, तृतीय अरब-इजरायल युद्ध, पश्चिम एशिया की समस्या और निक्सन प्रशासन, चतुर्थ अरब-इजरायल युद्ध, अमेरिका शांति समझौता में अमेरिकी पहल, अमेरिका और पूर्व एशिया, अमेरिका का जापान के साथ सम्बन्ध, अमेरिका और कोरिया, अमेरिका और हिन्द चीन, कम्बोडिया का संकट और अमेरिका, वियतनाम संघर्ष और अमेरिका, अमेरिकी नीति में परिवर्तन, अमेरिका और कम्युनिस्ट चीन, वारसा की वार्त्ता, पिंगपांग राजनय, निक्सन को चीन का निमन्त्रण, निक्सन की घोषणा, राष्ट्रपति की चीन-यात्रा के कारण, चीन की विजय, संयुक्त राष्ट्रसंघ में चीन का प्रवेश, निक्सन की पिकिंग यात्रा,
संयुक्त विज्ञप्ति, वाशिंगटन लौटने पर निक्सन ने कहा, चीन और अमेरिका में सहयोग, अमेरिका और सोवियत संघ के नवीन सम्बन्ध, कार्टर प्रशासन की विदेश नीति, रोनाल्ड रीगन की विदेश-नीति, जार्ज बुश तथा बिल क्लिंटन की विदेश-नीति, अमेरिकी विदेश-नीति का मूल्यांकन।

6. सोवियत संघ की विदेश-नीति 172-216

सोवियत विदेश-नीति में मूलाधार, स्टालिग युग में सोवियत विदेश-नीति, विदेश-नीति का निर्धारण, विश्व में साम्यवादी क्रांति के प्रसार की नीति, पूर्वी यूरोप पर सोवियत प्रभाव की स्थापना, लोहे के पर्दे की नीति, उपनिवेशवाद का विरोध और शांति का समर्थन, संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रति सोवियत नीति, स्टालिन की नीति का मूल्यांकन, स्टालिनोत्तर विदेश-नीति, सोवियत विदेश-नीति में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त, यात्रा, राजनय और आर्थिक सहायता की नीति, शिखर-सम्मेलन, आर्थिक सहायता की नीति, सोवियत संघ और जर्मनी, विदेश मन्त्रियों का जेनेवा सम्मेलन, शिखर सम्मेलन के बाद, वियना सम्मेलन के बाद, बर्लिन की दीवार, क्यूबा का संकट और सोवियत संघ, सोवियत संघ का नया नेतृत्व और विदेश-नीति, ताशकन्द-सोवियत राजनय का नया अध्याय, सोवियत राजनय का जादू, सोवियत राजनय की सफलता के कारण, पाकिस्तान के प्रति नवीन दृष्टिकोण, अरब-इजरायल युद्ध और सोवियत संघ, चतुर्थ अरब-इजरायल युद्ध और सोवियत संघ, सोवियत संघ और वियतनाम, पश्चिम के प्रति सोवियत संघ का नया रुख, पूर्वी यूरोप के समाजवादी देश और सोवियत संघ, सोवियत संघ के पृष्ठा पोषक राज्य, टीटो-स्टालिन मतभेद, सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं काँग्रेस, सोवियत संघ और हंगरी, मास्को पिकिंग मतभेद, अल्बानिया और सोवियत संघ, चेकोस्लोवाकिया की घटना, चेकोस्लोवाकिया में उदारवाद, सोवियत संघ का विरोध, सोवियत हस्तक्षेप, मास्को समझौता, मास्को समझौता के बाद, 1969 का विश्व कम्युनिस्ट सम्मेलन, सोवियत विदेश-नीति की नवीनतम प्रवृत्तियाँ, पश्चिम जर्मनी के साथ समझौता, पारस्परिक सुरक्षा सन्धियों की नीति, बांगला देश और सोवियत संघ, एशियाई सामूहिक सुरक्षा की सोवियत योजना, अमेरिका-चीन मिलाप और सोवियत संघ, अमेरिका के साथ नया सम्बन्ध, ब्रेजनेव की अमेरिकी यात्रा, निक्सन की सोवियत संघ की यात्रा, ब्लाडी-वास्तिक सम्मेलन, सोवियत विदेश-नीति का मूल्यांकन, 1977-80 का लेखा-जोखा, अफगानिस्तान का संकट, 1973, 1978 तथा 1979 की क्रांति, अमेरिका की बौखलाहट, चीन का दृष्टिकोण, पाकिस्तान की स्थिति, सोवियत उपलब्धि, आठवे दशक की संभावनाएँ, ब्रेजनेव के बाद सोवियत संघ की विदेश-नीति, मिखाइल गोर्वाचोव और सोवियत विदेश-नीति, निष्कर्ष।

7. साम्यवादी चीन की विदेश-नीति 217-240

मान्यता का प्रश्न, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अभ्युदय का महत्त्व, चीन की स्थिति पर प्रभाव, संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रभाव, नवीन शक्ति-संतुलन, एशिया और अफ्रीका पर प्रभाव-विस्तार, सोवियत संघ पर प्रभाव, चीन की विदेश-नीति के आधार और लक्ष्य, साम्यवादी विचारधारा, उपनिवेशवाद और पूँजीवाद का विरोध, राष्ट्रीय हित का तत्त्व, विदेश-नीति के साधन, साम्यवादी चीन की विदेश-नीति, साम्यवादी चीन और फारमोसा, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध की स्थापना, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन की उग्र विदेश-नीति का उदय, साम्यवादी चीन और एशिया पर प्रभाव-स्थापना का प्रश्न, चीन की विदेश-नीति का मूल्यांकन, अन्तरिक्ष में चीन का प्रवेश और विश्व राजनीति पर उसका प्रभाव, विदेश-नीति में नयी प्रवृत्ति, संयुक्त राष्ट्रसंघ में चीन का प्रवेश, चीन और अमेरिका के नये सम्बन्ध, जापान के साथ चीन का नया सम्बन्ध, चीन और सोवियत संघ के सम्बन्ध, पारस्परिक सुरक्षा समझौता, संयुक्त राष्ट्रसंघ में चीनी की मान्यता का प्रश्न, प्रगाढ़ मैत्री, चीन और सोवियत संघ के मतभेद, ख्रुश्चेव का पतन और चीन-रूस विवाद, रूस-चीन सीमा विवाद, चीन-जापान शान्ति मैत्री संधि और पूर्व का नाटो, हिन्द-चीन में टकराव, अफगानिस्तान में सोवियत प्रभाव वृद्धि और रूस चीन सम्बन्ध, चीन की विदेश नीति का मूल्यांकन।

8. भारत की विदेश नीति 241-274

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास, विदेश-नीति की परम्परा का विकास, स्वतन्त्र भारत की विदेश-नीति का निर्माण और उसके तत्त्व, गुटबन्दियाँ, भौगोलिक तत्त्व, विचारधाराओं का प्रभाव, तत्कालीन परिस्थिति, आर्थिक तत्त्व, विदेश-नीति

Scanned by TapScanner

की विशेषताएँ, असंलग्नता की नीति, युद्धोत्तर-विश्व राजनीति, गुट निरपेक्षता की नीति, असंलग्नता का अर्थ, असंलग्नता की नीति का प्रयोग, 1947 से 1950 तक, 1950 से 1957 का काल, 1957 से 1962 तक, भारत-चीन युद्ध और असंलग्नता की नीति की अग्नि-परीक्षा, 1965 का भारत-पाक युद्ध और असंलग्नता की नीति, पंडित नेहरू की देन, नेहरू की मृत्यु और असंलग्नता की नीति, असंलग्नता की नीति का अन्त, शांतिपूर्ण सह-जीवन और विश्व-शांति, कोरिया, हिन्द-चीन, पंचशील, शांतिपूर्ण सह-जीवन पंचशील का मूल्यांकन, साम्राज्यवाद और प्रजातीय विभेद का विरोध, उपनिवेशवाद और 1957 के बाद की भारतीय नीति, एशियाई अफ्रीकी और गुटनिरपेक्ष देशों का संगठन, दिल्ली का एशियाई-सम्मेलन, बाँडुंग सम्मेलन, गुटनिरपेक्ष राज्यों का सम्मेलन और भारत, भारत और संयुक्त राष्ट्रसंघ, निरस्त्रीकरण के प्रति भारत का दृष्टिकोण, परमाणविक शक्ति के रूप में भारत, भारत, ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस, केन्या के प्रवासी भारतीय और भारत-ब्रिटेन सम्बन्ध, भारत, फ्रांस और पुर्तगाल, गोआ की समस्या, भारत और अफ्रीका, हिन्द चीन की समस्या के प्रति भारत का दृष्टिकोण, वियतनाम संघर्ष और भारत, कम्बोडिया का संकट और भारत, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका, ऐतिहासिक अरब-इजरायल संघर्ष और भारत, भारत और रबात सम्मेलन, बंगला देश के प्रति अरब दृष्टिकोण और भारत-अरब सम्बन्ध, चतुर्थ अरब-इजरायल युद्ध और भारत, भारत और कम्पुचिया, अफगानिस्तान का संकट और भारत, लेबनान का संकट और भारत, मालदीप और भारत, फिलीस्तीन और भारत, भारत की विदेश-नीति का मूल्यांकन। 27

9. भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, कूटनीतिक सम्बन्ध की ओर, सन्देह के वातावरण में सम्बन्ध का प्रारम्भ, कश्मीर, पाकिस्तान को अमेरिकी सहायता सैन्य संगठन, निरस्त्रीकरण, गोआ, पूर्वी एशिया, भारत-चीन युद्ध और अमेरिका, भारतीय प्रधानमन्त्री की प्रस्तावित अमेरिकी यात्रा 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध और अमेरिका, 1966-71 के काल में भारत-अमेरिकी सम्बन्ध, बांगला देश के संदर्भ में भारत-अमेरिकी सम्बन्ध, प्रधानमंत्री की अमेरिकी यात्रा, निक्सन का पत्र, सीमा संघर्ष पर अमेरिकी प्रतिक्रिया, युद्ध के विस्फोट पर अमेरिकी प्रतिक्रिया अमेरिकी रवैये पर भारतीय प्रतिक्रिया, अमेरिका का युद्धपोत राजनय, असन्तोषजनक सम्बन्ध, पी० एल० 480 पर समझौता, दिआगो गार्सिया के सम्बन्ध से तनाव, भारत-अमेरिका संयुक्त-आयोग, राष्ट्रपति फोर्ड और भारत सम्बन्ध का नया दौर-कार्टर युग, आठवें दशक की सम्भावनाएँ, राष्ट्रपति रीगन का काल और भारत-अमेरिका सम्बन्ध, भारत और जार्जबुश; भारत और बिल क्लिंटन आदि। 295-325

10. भारत और सोवियत संघ

ऐतिहासिक पृष्ठाधार, स्टालिन युग में भारत-सोवियत सम्बन्ध, सोवियत संघ की नयी विदेश-नीति और भारत, हिन्द-चीन की समस्या, पंचशील और सैन्य संगठनों का निर्माण, यात्राओं का आदान-प्रदान, निरस्त्रीकरण और गोआ, आर्थिक सहयोग, भारत-चीन युद्ध और सोवियत संघ, सोवियत सहायता, सोवियत संघ का नया नेतृत्व और भारत, 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध और सोवियत संघ, कश्मीर समस्या पर सोवियत दृष्टिकोण, भारत-पाक युद्ध और सोवियत संघ, ताशकन्द सम्मेलन, पाकिस्तान को सोवियत सैनिक सहायता और भारत, रूसी सामूहिक सुरक्षा का प्रस्ताव और भारत सोवियत संघ और चीन का सीमा-विवाद और भारत का दृष्टिकोण, सोवियत विश्वकोष और भारत, भारत और सोवियत संघ की संधि, सन्धि का स्वरूप, सैनिक गुटबन्दी नहीं, हमले के खिलाफ गारंटी, सोवियत-भारत मैत्री का एक नया अध्याय, चीन-अमेरिका के प्रेमालाप से तुलना, सन्धि की उत्पत्ति, भारतीय विदेश-नीति के इतिहास में एक नया अध्याय, बांगलादेश की राजनीति पर प्रभाव, भारत में सोवियत प्रभाव की वृद्धि की आशंका; भारत सोवियत सन्धि पर अमेरिकी प्रतिक्रिया, अशांति का नया क्षेत्र, भारत-पाकिस्तान युद्ध और सोवियत संघ, बांगला देश की समस्या पर भारत-सोवियत सहयोग, युद्ध पर सोवियत प्रतिक्रिया, सहयोग का बढ़ता हुआ दायरा, भारत और सोवियत संघ के आर्थिक सहयोग, ब्रेजनेव की भारत यात्रा, आर्थिक समझौता, एशियाई सामूहिक सुरक्षा की सोवियत योजना और भारत, सोवियत आर्थिक सहायता, रूबल-रुपया विनिमय-दर और गेहूँ के सम्बन्ध में मतभेद, जनता सरकार और भारतीय-सोवियत सम्बन्ध, देसाई की रूस-यात्रा, कोसिजिन की भारत यात्रा, अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेत और भारत-रूस सम्बन्ध, सोवियत संघ का विघटन और तत्कालीक स्थिति, निष्कर्ष। 326-343

11. भारत-चीन सम्बन्ध

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, तिब्बत का प्रश्न और भारत चीन सम्बन्ध, तिब्बत की स्थिति, सीमा-विवाद, भारत-चीन युद्ध, तटस्थ राष्ट्रों की प्रतिक्रिया, चीन की दूसरी धमकी, कोलम्बो प्रस्ताव, नासिर प्रस्ताव, 1965 का भारत-पाक युद्ध और चीन, चीन का अन्तिमेत्थम चीन की सैनिक हरकत, चीन का पिंगपाँग राजनय और भारत, बंगला देश की समस्या और भारत-पाक युद्ध के प्रति चीन का रुख, भारत की प्रतिक्रिया, भारत के प्रति चीन का नवीन दृष्टिकोण, वर्तमान स्थिति, निष्कर्ष।

Scanned by TapScanner

12. भारत और पाकिस्तान 344-385

देशी राज्यों की समस्या, आर्थिक तनाव, युद्ध नहीं करो की घोषणा, नदियों के पानी का झगड़ा, भारत-चीन युद्ध और पाकिस्तान, स्वर्णसिंह भुट्टो वार्ता, पाकिस्तान का जासूसी षड्यंत्र, हजरतबल घटना और भारत-पाक सम्बन्ध, कच्छ का झगड़ा, 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, कश्मीर में पाकिस्तान की घुस-पैठ, युद्ध का प्रारम्भ, युद्ध विराम, युद्ध के परिणाम, युद्ध-विराम का उल्लंघन, ताशकन्द सम्मेलन, ताशकन्द समझौते का महत्त्व, ताशकन्द समझौता के बाद, विमान अपहरण काण्ड और भारत-पाक सम्बन्ध, पाकिस्तान का गृह-युद्ध, पाकिस्तान में निर्वाचन, अवामीलीग के कार्यक्रम, बंगालियों का मुक्ति-संग्राम, पाकिस्तान द्वारा दमन, भारत का दृष्टिकोण, राजनयिक तनाव, मान्यता का प्रश्न, मुक्तिसेना की गतिविधि में तेजी, स्वेतपत्र का प्रकाशन, भारत सोवियत संधि, राजनयिकों का प्रत्यावर्तन, पुनः मान्यता का प्रश्न, मुक्ति सेना की गतिविधि में तेजी, याहिया की घोषणा, सीमान्तों पर सेना का तनाव, इन्दिरा गाँधी द्वारा पश्चिमी देशों की यात्रा, पाकिस्तान में युद्ध-उन्माद, मुक्तिवाहिनी के संगठन में भारत का योगदान, 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, युद्ध का विस्फोट, भारतीय प्रतिक्रिया, पाकिस्तान का दावा, क्या भारत आक्रमक था?, युद्ध रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का प्रयास, बांगलादेश की मान्यता, पाकिस्तान द्वारा भारत से सम्बन्ध विच्छेद, संयुक्त-राष्ट्रसंघ में भारत-पाक युद्ध का प्रश्न, युद्ध का विवरण, पाकिस्तानी सेना का आत्मसमर्पण, एकतरफा युद्ध विराम, युद्ध में पाकिस्तान के हार के कारण, कमजोर नैतिक पक्ष, भौगोलिक स्थिति, भारत को हस्तक्षेप का मौका, युद्ध का परिणाम, भारतीय विदेश-नीति पर प्रभाव, दक्षिण एशिया के संतुलन पर-प्रभाव, भारत की आन्तरिक राजनीति पर प्रभाव, पाकिस्तान में संकट, युद्धोपरांत पाकिस्तान, पाकिस्तान में संकट, बंगला देश के प्रति दृष्टिकोण, विदेश-नीति, भारत के साथ सम्बन्ध, शिमला का शिखर सम्मेलन, शिमला-समझौते के बाद, मानवीय समस्याओं पर दिल्ली समझौता, बंगला देश को पाकिस्तानी मान्यता, नयी दिल्ली का त्रिपक्षीय समझौता, परमाणविक परीक्षण और भारत-पाक सम्बन्ध, सितम्बर 1974 का समझौता, व्यापारिक समझौता, पाकिस्तान में सत्ता परिवर्त्तन, तत्कालीक स्थिति, निष्कर्ष।

13. भारत और बंगला देश 386-398

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, बांगला देश की मान्यता, भारत-बांगलादेश की पहली सन्धि, मुजीब की रिहाई में भारत का योगदान, शेख मुजीब का भारत आगमन, भारत बांगलादेश के बीच दूसरी सन्धि, बांगलादेश को मान्यता, मुजीब का कलकत्ता आगमन, इन्दिरा गाँधी की ढाका-यात्रा, मित्रता और सहयोग की पचीस-वर्षीय सन्धि, सन्धि का विश्लेषण, भारत बांगलादेश व्यापार समझौता, शिमला समझौता और बांगला देश, बांगला देश और संयुक्त राष्ट्रसंघ, भारत-बांगला देश का सांस्कृतिक समझौता, भारत विरोधी वातावरण, भारत-पाकिस्तान समझौता और बांगलादेश, पाकिस्तान द्वारा बांगलादेश की मान्यता, अप्रैल, 1974 की त्रिपक्षीय वार्ता, फरक्का समझौता, बांगला देश में राजपलटी और भारत फरक्का पर समझौता, निष्कर्ष।

14. गुटनिरपेक्ष आन्दोलन 399-416

प्रथम एशियाई सम्मेलन, द्वितीय एशियाई सम्मेलन, तीसरी शक्ति का अभ्युदय, बांडुंग सम्मेलन, बेलग्रेड सम्मेलन, काहिरा सम्मेलन, लूसाका सम्मेलन, बेलग्रेड और दारेस्सलाम सम्मेलन, शिखर सम्मेलन, दारेस्सलाम सम्मेलन की तैयारी, लुसाका सम्मेलन, तटस्थ राष्ट्रों का चतुर्थ अल्जीयर्स सम्मेलन, गुटनिरपेक्ष राज्यों का कोलम्बो तथा हवाना सम्मेलन, नयी दिल्ली का सातवाँ गुटनिरपेक्ष सम्मेलन, हरारे का आठवाँ गुटनिरपेक्ष सम्मेलन, बेलग्रेड का नवाँ गुटनिरपेक्ष सम्मेलन, जर्काता का दसवां गुटनिरपेक्ष सम्मेलन।

15. भारत और उसके पड़ोसी राज्य 417-434

भारत और श्रीलंका—भारत विरोधी रूख, भारत के प्रति लंका की नीति में परिवर्तन, लंका में प्रवासी भारतीयों की समस्या, नेहरू-कोटलावाला समझौता, 1964 का समझौता, कच्छादीव का प्रश्न, वर्तमान स्थिति।

भारत और नेपाल—नेपाल की भौगोलिक और राजनीतिक स्थिति, स्वतंत्र भारत और नेपाल, नेपाल का गृहयुद्ध और भारत, नेपाली कांग्रेस और भारत विरोधी अभियान, नेपाल की आन्तरिक राजनीति, टंका प्रसाद आचार्य के प्रधानमंत्रित्व काल में भारत-नेपाल सम्बन्ध, के० आई० सिह का प्रधानमंत्रित्वकाल और भारत, बी० पी० कोइराला और भारत, 1962 के उपरान्त भारत-नेपाल सम्बन्ध, 1966-89 के काल में भारत-नेपाल सम्बन्ध, आज की स्थिति।

Question Bank *435-443*

Bibliography *444-448*

Scanned by TapScanner